M.A. IInd sem

भारत का इतिहास (550 ई. 1200 ई. तक)

डॉ. हेमन्त लोदवाल - 5-5-20

यूनिट - 5 विषय :- सेन राजवंश

सेनवंशी शासकों के पूर्व पुरुषों के मूल स्थान और उत्पत्ति सम्बन्धी उल्लेख विजयसेन के देवपाड़ा अभिलेख एवं लक्ष्मणसेन के माधाइनगर अभिलेख में मिलते है। तदनुसार, वे चन्द्रवंशी थे और उनका प्रारम्भिक पुरुष वीरसेन था। जिस कुल में सामन्तसेन उत्पन्न हुआ। देवपाड़ा अभिलेख के आठवें श्लोक से ज्ञात होता है कि सेनवंश के पूर्व पुरुष मूलतः कर्णाट (आधुनिक पश्चिमी आन्ध्र प्रदेश और मैसूर के उत्तर भाग) के निवासी थे। और वे स्वयं को ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही मानते थे।

सेन लोग कर्णाट देश से कब और कैसे आये, इसकी जानकारी प्राप्त नहीं होती। देवपाड़ा अभिलेख में सामन्तसेन के प्रारम्भिक सैन्य कार्यों का क्षेत्र दक्षिण था, किन्तु वृद्धावस्था में उसने उत्तर में गंगा नदी के किनारों के वन्य प्रदेशों में स्थित तीर्थों का भ्रमण किया। किन्तु बल्लालसेन के नैहटी अभिलेख राढ़ा के उत्तरी भागों में एक छोटा सा क्षेत्र अधिकृत कर लिया। उसके प्रयत्नों से उसके पुत्र हेमन्तसेन ने राजसत्ता का उपभोग किया।

विजयसेन -(1095 - 1158 ई.)

हेमन्तसेन के बाद रानी यशोदेवी से उत्पन्न उसका विजयसेन नामक पुत्र गद्दी पर बैठा। दक्षिण राढ़ा में स्थापित शूरवंश की एक राजकुमारी (विलासदेवी) से विवाह कर उसने अपनी सत्ता के विस्तार का प्रयत्न किया। देवपाड़ा, बैरकपुर और पैकोर नामक स्थानों से तीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं। रामपाल की मृत्यु के बाद पालों की अवनति का विजयसेन ने अपनी सत्ता पूर्व बंगाल और उत्तरी बंगाल के बड़े भाग पर स्थापित करली।

गौड़राज पर विजयसेन की विजय को सर्वाधिक महत्व दिया देवपाड़ा अभिलेख में गौड़राज कहा गया है कि गौड़राज भयभीत होकर भाग जाने वाला कहा गया है और वह शासक पाल मदनपाल था। उत्तरी बंगाल में पाल सत्ता कमजोर होने लगी और सेन सत्ता स्थापित होने लगी। विजयसेन ने वहीं के पद्मसर नामक तालाब के किनारे प्रद्युम्नेश्वर शिवमन्दिर बनवाया उसने परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज एवं अरिराजवृषभशंकर जैसी उपाधियाँ धारण की थी।

बख्तियार खलजी का आक्रमण :- 1193 ई. में मगध के बिहार नामक नगर को ध्वस्त कर बख्तियार खलजी जब कुतुबुद्दीन ऐबक के सम्मुख उपस्थित हुआ तो अगला आदेश लखनौती भी जीतने की आज्ञा मिली। मिनहाजुद्दीन ने अपने तबकाते-नासिरी में बख्तियार लखनौती विजय का जो विवरण दिया है उसमें कितनी सत्यता थी कहा जाता है कि बख्तियार ने इतनी तेजी से सेन राज्य पर आक्रमण किया कि उसकी सेना का मुख्य भाग बहुत पीछे छूट गया और लक्ष्मणसेन की राजधानी नदिया पहुँचते-पहुँचते केवल 18 घुड़सवार उसके साथ रह गये। और वह राजदरबार में घुस गया तथा उसने लूट किया। सेन राजदरबार में तुर्कों के नाम से भयभीत हो गये। लक्ष्मणसेन की तुर्क आक्रमण से दुर्गति तो हुई, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से उसका समय महत्वपूर्ण था।

मिनहाजुद्दीन उसे बंगाल का बड़ा राजा कहता है और वह कहता है कि लक्ष्मणसेन दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था। राजशेखर अपने प्रबन्धकोश में लक्ष्मणसेन की प्रशंसा में कहता है कि वह बड़ा प्रतापी और न्यायी था तथा उसके पास विपुल राज्य और [illegible] जयदेव, पवनदूत (धोयी), ब्राह्मण सर्वस्व (हलायुध) और श्रीधरदास जैसे साहित्यकार उसके समय दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

लक्ष्मण सेन के उत्तराधिकारी :- नदिया पर 1202 ई. में बख्तियार खलजी के आक्रमण के साथ लक्ष्मणसेन अथवा सेनवंश की समाप्ति नहीं हो पायी थी। उसके बाद भी लम्बे समय तक शासन करते रहे। लक्ष्मणसेन की मृत्यु 1205 ई. में हुई। उसके बाद उसके दो पुत्रों ने शासन किया। जिनमें विश्वरूपसेन और केशवसेन ने दक्षिण और पूर्वी बंगाल पर लगभग 20-25 वर्षों तक शासन किया, जहाँ से उनके तीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों में इन्हें साम्राज्यसूचक विरुद दिये हैं। उनकी उपलब्धी की जानकारी नहीं मिलती है। मिनहाजुद्दीन कहता है कि 1260 ई. में जब तबकाते-नासिरी की रचना पूर्ण की तब भी लक्ष्मणसेन के वंशजों का शासन उन प्रदेशों पर स्थापित था।

बल्लालसेन (1159-1179 ई.) :- सन 1958-59 ई. में विजयसेन की मृत्यु हो गयी और विलासदेवी से उत्पन्न बल्लालसेन पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी बना। उसके नैहट्टी अभिलेख में उसके 11 वर्ष शासन करने का उल्लेख मिलता है। बल्लालसेन की सैनिक विजय की जानकारी प्राप्त नहीं होती। उसने गोविन्दपाल को 1162 ई. के आसपास हराकर बिहार पर अधिकार कर लिया। और गौडेश्वर की उपाधि धारण की। माधाइनगर अभिलेख में बताया कि बल्लालसेन ने चालुक्य राजा जगदेकमल्ल II की पुत्री रामदेवी से विवाह किया। बल्लालचरित में उसके राज्य क्षेत्र के बंग, वरिन्द्र, राढ़, बागडी और मिथिला आदि थे। उसने अपने पिता की भाँति परममाहेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज, अरिराज निःशंकशंकर की उपाधियाँ धारण की। वह शैव धर्म को मानने वाला था उसने दानसागर और अद्भुत सागर नामक ग्रन्थों की रचना की। वह एक साहित्यकार भी था।

लक्ष्मणसेन - (1179-1205 ई.)

बल्लालसेन ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में गद्दी को त्यागकर रानी रामदेवी से उत्पन्न लक्ष्मणसेन को राज्याभिषेक कर दिया। उसके शासनकाल के आठ अभिलेख बंगाल से प्राप्त हुए हैं, जिनमें उसकी विजयों और सांस्कृतिक क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त होती है। उसने अरिराजमर्दनशंकर और गौडेश्वर की उपाधियाँ धारण की तथा उसने शैवधर्म को त्यागकर वैष्णव धर्म को अपना लिया। इसलिए परमवैष्णव की उपाधि भी दी गयी है।

लक्ष्मणसेन की विजयें उसके पुत्र विश्वरूपसेन के मदनपाड़ा अभिलेख में एक लम्बी विरुदों की सूची है साथ ही उसने पुरी (भुवनेश्वर) काशी, त्रिवेणी संगम अर्थात प्रयाग में विजयस्तम्भों की स्थापना की। इससे स्पष्ट होता है कि लक्ष्मणसेन महान विजेता था। क्योंकि उसके प्रारम्भिक अभिलेखों में गौड, बंग और राढ़ पर उसके अधिकार की पुष्टि होती है माधाइनगर अभिलेख में उसने गौड, कामरूप, काशी, और कलिंग की विजय की। लक्ष्मणसेन का समकालिक शासक जयचन्द था इन दोनों के आधिपत्यिक संघर्ष की पुरातन राजशेखर कृत प्रबन्धकोश में बताया है कि जयचन्द ने लक्ष्मणसेन के राज्य पर आक्रमण किया किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। स्वयं लक्ष्मणसेन के विजयसम्बन्धी उल्लेखों में कोई वर्णन नहीं मिलता।